सम्मिलित पूजा

श्री देवशास्त्र गुरू पूजा, विदेह क्षेत्र में विद्यमान बीस तीर्थंकर तथा अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी पूजा

हस्तिनापुर

दोहा

देव शास्त्र गुरु नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूं चित्त हुलसाय॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरु समूह ! श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह। श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

अनादिकाल से जग में स्वामिन् जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रयनिधि को नहिं पहिचाना॥
अब निर्मल रत्नत्रय जल ले देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, जन्म-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

चन्दन जल

भव आताप मिटावन की निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने अब तक मैंने पर में की झूंठी ममता है॥
चन्दन सम शीतलता पाने श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

सफेद चावल

अक्षय पद के बिना फिरा जगत की लख चौरासी योनि में।
अष्ट कर्म के नाश करन को अक्षत तुम ढ़िग लाया मैं॥
अक्षय निधि निज की पाने अब देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

पीले चावल

पुष्प सुगन्ध से आतम ने शील स्वाभाव नशाया है।
मन्मथ बाणों से बिंध के चहुँ गति दुःख उपजाया है॥
स्थिरता निज में पाने को श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

सफेद चिटकी

षट रस मिश्रित भोजन से ये भूख न मेरी शान्त हुई।
आतम रस अनुपम चखने से इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई॥
सर्वथा भूख के मेटन को श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

पीली चिटकी

जड़ दीप विनश्वर को अबतक समझा था मैंने उजियारा।
निज गुण दरशायक ज्ञान दीप से मिटा मोह का अंधियारा॥
ये दीप समर्पित करके मैं श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

ये धूप अनल में खेने से कर्मों को नहीं जलायेगी।
निज में निज की शक्ति ज्वाला जो राग द्वेष नशायेगी॥
उस शक्ति दहन प्रकटाने को श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

पिस्ता बिदाम श्रीफल लवंग चरणन तु ढ़िग में ले आया।
आतमरस भीने निजगुण फल मम मन अब उनमें ललचाया॥
अब मोक्ष महा फल पाने को श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

अष्टम वसुधा पाने को कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से निज में निज गुण प्रकट किये॥
ये अर्घ समर्पण करके मैं श्री देव शास्त्र को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

जयमाला

नसे घातिया कर्म अर्हन्त देवा, करें सुर असुर नर मुनि नित सेवा।
दरश ज्ञान सुख बल अनन्त के स्वामी, छियालीस गुण युक्त महा ईश नामी॥

तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी, महा मोह विध्वंसिनी मोक्ष दानी।
अनेकान्तमय द्वादशांगी बखानी, नमों लोकमाता श्री जैन वाणी॥

विरागी अचरज उवज्झाय साधू, दरश ज्ञान भण्डार समता अराधू।
नग्न वेषधारी सुएका विहारी, निजानन्द मण्डित मुक्ति पथ प्रचारी॥

विदेह क्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजें, विरह मान वन्दूं सभी पाप भाजें।
नमूं सिद्ध निर्भय निराभय सुधामी, अनाकुल समाधान सहजाभिरामी॥

छन्द :- देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर सिद्ध हृदय बिच धरले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके भव सागर जिय तरले रे।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्य: श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्य:, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूत भविष्यत् वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमकृत्रिम, तीन लोक मे मन लाऊँ॥

ॐ ह्रीं त्रिकाल सम्बन्धी तीस चौबीसी त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत्य भक्ति आलोचना चाहूं कायोत्सर्ग अघनाशन हेत।
कृत्रिमकृत्रिम तीन लोक में राजत हैं जिन बिम्ब अनेक॥
चतुर निकाय के देव जजें ले अष्ट द्रव्य निज भक्ति समेत।
निज शक्ति अनुसार जजूं मैं कर समाधि पाऊँ शिव खेत॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूर्व मध्य अपरान्ह की वेला पूर्वाचार्यों के अनुसार।
देव वन्दना करूं भाव से सकल कर्म के नाशन हार॥
पंच महागुरु सुमिरन करके कायोत्सर्ग करूं सुख कार।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊंगा अब मैं भव पार॥

(कायोत्सर्ग पूर्वक ९ बार णमोकार मन्त्र जपें)

शोडष कारण भावना भाऊँ, दशलक्षण हिरदय धारूं।
सम्यक् रत्नत्रय गहि करके अष्ट कर्म वन को जारूँ ॥

ॐ ह्रीं षोडष कारण भावना दशलक्षण धर्म सम्यक् रत्नत्रयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कैलाशपुरी पावा चम्पा गिरिनार सम्मेद जजूं।
तीरथ सिद्ध क्षेत्र अतिशय श्री चौबीसों जिनराज भजूं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: तथा सिद्ध क्षेत्रातिशक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।